हारमोनियममास्टर

आठवाँ भाग

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible]

हारमोनियम सीरीज़ का [illegible]

अनुवादक

पण्डित [illegible]प्रसाद वाजपेयी

[illegible]गंज लखनऊ

प्रथम [illegible]

लखनऊ

[illegible] [illegible] [illegible]

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा

सन् [illegible] ई०

昭和48年 [illegible] 科学研究費購入図書
東京外国語大学 図書館 蔵書
177[illegible]
49. 3. 30

सर्वाधिकार रक्षित हैं।

भूमिका

प्रिय महाशय ! गानविद्या को प्रत्येक भाषा में दखल है और इसका गुण प्रत्येक भाषा में एकसा होता है यद्यपि उच्चारण से बाहिरी भेद न्यूनबुद्धिवाले को ज्ञात होता है परन्तु ज्ञाताओं के निकट यह भेद बिल्कुल नहीं है गानविद्या का ठहराव केवल स्वरों पर है और संसार में कोई आवाज़ ऐसी नहीं है जो इन नियमित स्वरों से पृथक् हो इस कारण आवाज़ कैसीही कठिन क्यों न हो वह स्वरों से तुरन्त मिलेगी और उसका गुण नियमबद्ध गान इकसां पड़ेगा कठिन बात जो दूसरी भाषाओं के बजाने में है वह उससे अनभिज्ञ होने के कारण पैदा होती है नहीं तो इसमें कोई ऐसी कठिनाई हमको रोक नहीं होसकती–

इस पुस्तक में इस बात का ध्यान रक्खा गया है किसी किसी गायन का उल्था सरल उर्दू भाषा में सीखनेवाले की सुगमता के लिये लिख दिया गया है जिसमें कि गायन को समझ कर बजावें और दूना आनन्द होजावे–

प्रत्येक गायन के साथ साथ उर्दू गायन का भी ढंग बतलाया गया है जिससे बजाने में कुछ भी कठिनता न पड़ेगी और सीखनेवाला दूसरी भाषाओं के गाने बड़ी उत्तमता से बजा सकेगा आशा है कि प्रेमी इस नये और मनभावते ढंगसे लाभ उठाकर इस शुभचिन्तक को आशीर्वाद देंगे–

गढ़ मुक्तेश्वर ज़िला मेरठ
अगस्त १९०६ ईसवी

सोतीकृष्णगय क़मर देहलवी

निवेदन

प्रियपाठक ! जितनी भाषाओं से शुभचिन्तक ग्रंथकार विज्ञहै उन्हीं भाषाओं के प्रख्यात और मनभावते गायन इस पुस्तक में नमूने की तरहपर हारमोनियम सीखनेवालों के लिये लिखे गये हैं यह आवश्यक नहीं कि संसार की सब भाषाओं से हितैषी को विज्ञता हो इससे प्रेमियों से प्रार्थना है कि जिस भाषा की गायन वह हारमोनियम पर बजाना चाहें शुभचिन्तक के पास लिखकर भेज दें सम्भवतः उसका स्केच खींचने में परिश्रम किया जावेगा और पुस्तकों व समाचार पत्रों द्वारा पब्लिक के समक्ष किया जावेगा जिससे हारमोनियम का प्रत्येक प्रेमी बड़ी सुगमतासे प्रत्येक भाषाओं की गायन बजासके–

देखने में यह बात कुछ कठिन ज्ञात होती है परन्तु हमने इसको एक नये ढंग पर बतलाया है जिससे कुछ भी कठिनता न होगी किन्तु सीखनेवाला सुगमतासे रागिनी को बजा सकेगा प्रायः बहुतसे मनुष्य यह समझेंगे कि यह छोटी सी पुस्तक ऐसे कठिन काम को कैसे परिणाम को पहुँचा सकती है ? परन्तु जब वह एक बार सरसरी नज़र से सब पुस्तक देख जावेंगे तो तुरन्त जान लेंगे कि इस छोटे से मोती में एक मुख्य चमक बनानेवाले ने बहुत योग्यता से स्थापित की है जिससे अंधेरी सदैव दूर रहती है और मनुष्य की आंखें रात दिन भलेप्रकार अपना काम करती रहती हैं परीक्षा मुख्य है—

सङ्केत

नीचे उन शब्दों की व्याख्या की जाती है कि जो इस पुस्तक में कितनेही स्थानों में लिखेगये हैं और वह सीखने वालों के विशेष जानने के लिये लिखेगये हैं ध्वनि–रागिनी के स्वरों के जानने के लिये ध्वनि का नाम प्रत्येक रागिनी के साथ लिख दिया गयाहै जिसमें किसी प्रकार की भूल स्वरों में न हो और शिक्षक तुरन्त जानलेवे कि यह गायन उक्त रागिनी में अच्छा बजैगा–

ताल—बे सुरा होना एक बार बुरा न जान पड़ेगा परन्तु बे ताला बहुतही दोष समझा जाता है इससे ताल काभी हवाला दिया गया है–

लय—यदि ताल के साथ लय भी ज्ञात हो जावे तो फिर क्या ही बात है गायन के अच्छे बजने में कोई सन्देह न रहेगा–

समय—यद्यपि सीखनेवाले के लिये समय का विशेष ध्यान न होना चाहिये तथापि परिश्रम करना चाहिये कि समय का ध्यान रहे जैसा कि नियम है–

चित्र हारमोनियम–बहुधा सीखनेवाले जो केवल पुस्तक के देखने सेही हारमोनियम का बजाना सीखगये हैं उनकी सुगमता के लिये पर्दों का चित्र सब आवश्यकीय बातों के सहित दियागया है–

नोट–अन्तिम नोट अवश्य अवलोकन कीजियेगा–

ताल और तबला

कोई कोई शौक़ीन ताल से इतनी ग्लानि करते हैं कि नाम लेना भी दोष समझते हैं यह उनकी तुच्छ बुद्धि है जोकि गान-विद्या के एक ऐसे बड़े भाग को निन्दा की दृष्टि से देखते हैं अर्थात् मुख्य अभिप्राय को बालाय ताक़ रखकर बाहिरी भड़क से लाभ उठाना चाहते हैं–

यदि आज कल्ह के प्रेमी पखावजको अपनी सोसाइटी में दाखिल होने की आज्ञा देदें तो वह अतिशीघ्र इस न्यूनता को पूरा कर सकता है–

हारमोनियम एक ऐसा साज़ है कि जिसको संसार के किसी साज़ की सहायता दरकार नहीं किन्तु और बाजे इस की सहायता से बज सकते हैं परन्तु यहभी कभी कभी खालके साज़ की सहायता चाहने लगताहै जिससे यह अपनी लहरैं और भी अधिक दिखलाताहै–

यद्यपि तबला आज कल्ह की शिक्षित समाज, सोसाइटियों में तुच्छ दृष्टि से देखा जाता है (और वस्तुतः ऐसा होना आवश्यक था) इस कारण शुभचिन्तक भी अपने शिष्यों को इस साज़ से परहेज़ करने की सदैव शिक्षा करता रहता है

रंतु साथही पखावज, चंग, मृदंग, सेडरम, खँजरी आदि वाल के बाजे बजाने के लिये शिक्षा करताहूं क्योंकि बिना वाल के साज़ के कुछ भी आनन्द नहीं आता–

खाल के साज़ से हर समय ताल की खबर होती रहती है हारमोनियस्ट का हाथ दुगुना चलताहै और बहुत जल्द उँगलियां तैयार होती हैं इससे हे हारमोनियम के प्रेमियो ! एक खाल का साज़ अवश्य सीखिये जोकि ३ मास बराबर परिश्रम से भले प्रकार आसकता है जबकि बतानेवाला " बताना " जानता हो–

———

चिह्न

पहिला सप्तक–जिस पर्दे पर + यह चिह्न होगा वह पहिले सप्तक में काम में लाया जावेगा जैसे सा–रे–गा आदि–

दूसरा सप्तक–जिस पर्दे पर कोई चिह्न न हो वह दर्मियानी सप्तक का पर्दा होगा जैसे–सा–रे–गा आदि–

तीसरा सप्तक–जिस पर्दे पर "^" यह चिह्न हो वह तीसरे सप्तक का पर्दा जानना चाहिये जैसे–सा–रे^–गा^ आदि–

सफेद पर्दा–जिस पर्दे पर सूर्य का चिह्न न हो वह अवश्य सफेद पर्दा होगा जैसे–सा–रे–गा आदि–

काला पर्दा–जिस पर्दे पर सूर्य का चिह्न होगा वह निस्सन्देह काला पर्दा होगा जैसे कि रे–गा–धा आदि–

वक़्फ़ा–जिस पर्दे के आगे एक अथवा इससे अधिक बिन्दु हों वहां उतनीही मात्रा ठहरना चाहिये जैसे–सा. सा.. या सा.... आदि–

जल्दी–ऊपर लिखे हुये के अतिरिक्त जिस पर्दे के पहिले कोई बिन्दु हो वहां उतनीही मात्रा कम ठहरना चाहिये जैसे– .सा ..सा आदि–

मात्रा–मात्रा उस थोड़ी सी देरी का नाम है जितनी देरी में मनुष्य एक दो तीन कह सके–इस पुस्तक में मात्रा का चिह्न बिन्दु से बतलाया गया है–

ज़रब–जिस पर्दे के आगे गुणा (×) का चिह्न हो वह पर्दा उतनीही बार बजाया जावेगा जैसा उसके आगे अंक हो

जैसे–सा×२ या सा×३ आदि अर्थात् सा सा या सा सा सा आदि–

शिक्षा–जब तक सीखनेवाला चिह्नों को अच्छी तरह से स्मरण न कर लेगा कोई गायन अच्छी तरह कदापि न बज सकेगी बारम्बार पृष्ठ उलटना निरर्थक है एक बार भलीविधि जानकारी होजानी चाहिये–

आवश्यकीय विज्ञापन

इस पुस्तक में भारतवर्ष की प्रख्यात प्रख्यात भाषाओं की अच्छी अच्छी गायन लिखी गई हैं इस कारण प्रत्येक मनुष्य सब भाषाओं के गायन देखकर अवश्य है कि घबरा जावे परन्तु घबराने की कोई बात नहीं है यदि प्रेमी लोग अपने चित्त को सावधान रक्खें और शुभचिन्तक ग्रन्थकार की लिखी बातों पर ध्यान दें तो ईश्वर चाहेगा कि इस कठिनता को सरल कर सकेंगे और मनमानी सफलता पावेंगे–

सूचीपत्र गायन

शायक़ीन ! इस पुस्तक में निम्नलिखित गायन भिन्न भिन्न भाषाओं की लिखी गई हैं जोकि बहुतही सुगमता से हारमोनियम के नियमों पर बतलाई गई हैं तर्ज़ वही रक्खी गई है कि जिस में प्रायः गाई जाती हैं—

१	जै जै सुरनायक जन सुखदायक—
२	मरीज़ुल्इश्क़ मुफ़्तूनुन व मजनूनू—
३	कुंडा पार वा नज़र न नी आवे—
४	इमरोज़ दीगरम् बफ़िराके तो शाम शुद—
५	तनी देखो हमरी ओर—
६	अगेन अगेन अगेन एंड अगेन—
७	वाड़ियाड़ा उंटरू सूप रम्मां—
८	बलायें ज़ुल्फ़ जाना की अगर लेते तो हम लेते—
९	असीरे इश्क़ मफ़त् न अस्त मजनूं—
१०	चरू कट्टा मेदा फ़ाख़्ता न शिस्ता बूद—
११	दोना न पुख़्ता बूदम—
१२	हरदम नूकर तेरियां रुठ टरा न जावे रांझना—
१३	हियर डियर माई लेडी—
१४	टीट्यूज़िंग ब्यूटी ने माई जंटिलहार्टको तोड़दिया—
१५	ज़ेहाल मिस्कीं मकुन्तग़ाफ़ुल दुराये नैना बनाये बतियां—

भारतवर्ष की सब भाषाओं के गायन उपरोक्त तर्ज़ों के उसी प्रकार बजेंगे—

हारमोनियममास्टर

आठवांभाग

ज़बान संस्कृत (भाषा)

ध्वनि भैरवी—ताल तीन—लय दर्मियानी—वक़्त सुबह—
तर्ज़—" जय जय कृष्ण मुरारी "

स्तुति (रामायण)

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रणतपाल भगवन्ता
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिन्धुसुता प्रियकन्ता
पालन सुर धरणी अद्भुत करणी मर्म न जानै कोई
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई
जय जय अविनाशी सब घट वासी व्यापक परमानन्दा
अविगत गोतीता चरित पुनीता माया रहित मुकुन्दा
ज्यहि लागि विरागी अति अनुरागी विगतमोह मुनिवृन्दा
निशि बासर ध्यावहिं हरिगुण गावहिं जयति सच्चिदानन्दा
ज्यहि सृष्टि उपाई त्रिविधि बनाई सङ्ग सहाय न दूजा
सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा
जो भव भय भंजन जन मन रंजन गंजन विपति बरूथा
मन वच क्रम बानी छांड़ि सयानी शरण सकल सुरयूथा

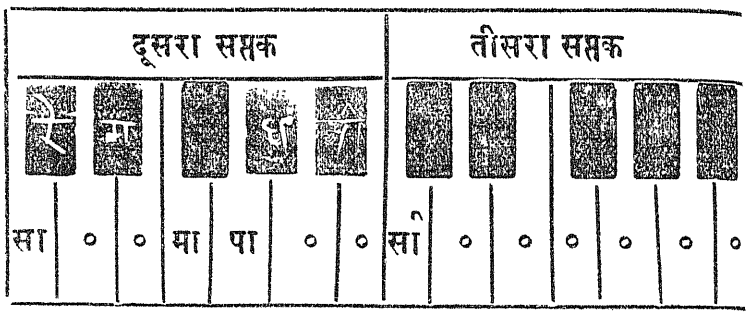

स्थायी और अन्तरा बराबर

जय जय	सुर	नायक	जन	सुख	दायक
सा×२	गा*×२	मा×३	पा×२	धा ×२	नी*×३

प्रण	त	पा	ल	भ	ग	वन	ता
सां	नी	धा*	पा	मा	गा*	रे*	सा....

सूचना

(१) शेष सब स्तुति उपरोक्त ढंग पर बजाना चाहिये—

(२) यह स्तुति भैरवी में इस कारण दी गई है कि हारमोनियम के प्रेमी प्रातःकाल बजाकर आनन्द उठावें बहुधा स्तुति (मुनाजात) आदि भैरवी में बजाई जाती हैं—

ज़बान अरबी

ध्वनि सारंग—ताल क़ौवाली—लय दर्मियानी—वक़्त ११ बजे दिन—

तर्ज़—" हक़ीक़ खैर उल्नार "

ग़ज़ल

मरीज़ुल्इश्क़ मुफ़्तूनुन व मजनूनू
सक़ूबुन् ऐनहू वल्क़ल्ब महेज़ूनू
नुजा महबूसहू मिन्क़ुल्ल सिजनिन्
फ़मा मसज़ूनु हाज़स्सिज्न मसज़ूनू
व मई यालम तलिद वलदुन् सेबल हिब्बी
फ़हुज़्ज़िया बस्सतन् फ़ीही फ़लातूनू
अलाया साहेबल्बुज़हिल् हसीनी
तआला हुस्नुकी अम्मा यक़ूलूनू
तरहहम वल्त फ़ितनहबल उशूक़ी
फ़इन् बआदत अनहू मात मजनूनू
बलाउल् इश्क़ या उम्मी बलाऊ
न आलाफ़ुल् मसायने फ़ीह मशहूनू

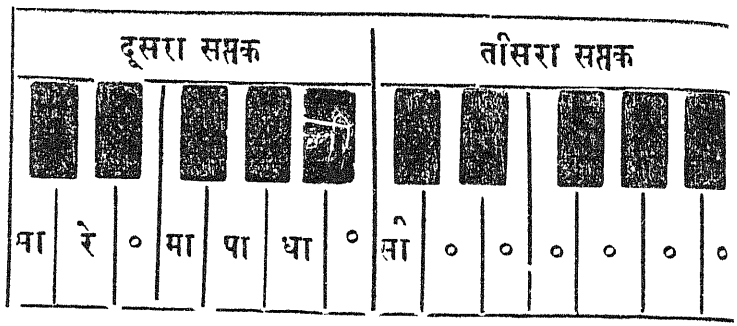

स्थायी अन्तरा बराबर

मरी	ज़उल्	इश्क़	मुफ़	तू	नुन	व
सा×२	रे.	मा×२	पा	धा	सा ̂.	.नी*

मज	नुन
धा	पा... ⁘

सूचना

(१) शेष सब गज़ल केवल उपरोक्त नियम पर बजैंगी–

(२) अन्तरा इसकारण प्रकट नहीं किया गया है कि तान के बिना अच्छा नहीं लगता उपरोक्त ढंग पर सब पद सादे ढंग में अच्छे बजैंगे–

(३) अरबी के शब्द अधिक ज़ोर देकर या हलक़ में न बोलिये किन्तु फ़ारसी के ढंग पर गाइये नहीं तो हारमोनियम पर बोल कटना कठिन हो जायगा–

ज़बान पंजाबी

ध्वनि कल्याण–ताल पश्तो मिलीहुई–लय धीमी–वक़्त शाम–

तर्ज़–" मेरा जानी किधर है गया "

आशिक़ की आवाज़

कुंडा पार वा नज़र न नी आवे

कुंडा पार वा..............

गड़ा नी गदाद हो गया–कुंडा पार वा नज़र न आवे हो·

लदी जांद़िया वे वेलिया–

कुंडा पार वा ....

जदी हीर नून फ़क़ीर नाल तोर दे

सेती दे मुराद पावेंगी

कुंडा पार वा..........

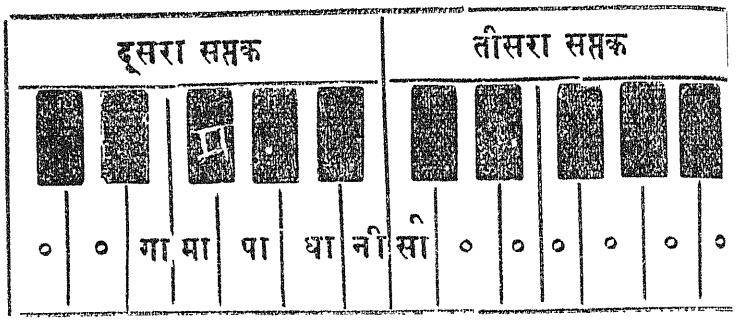

सूचना

(१) प्रत्येक बोल को स्वच्छता से बजावो "कुंडा पार वा" सदैव एकही ढंग पर बजेगा–

उल्था–नदी का दूसरा तट दृष्टि नहीं आता घड़ा डूब गया है लदी बहती हुई जा रही है अरे कोई बचा लो–

न ज़र ना नी आ आ वे कुंडा पा र वा गड़ा नी
.गा धा × ४ ..पा नी.. धा×२ पा. मा गा.... सां ×४

दा द हो ग या कुंडा पा र वा न ज़र न नी अ
नी. धा पा. धा नी.. धा×२ पा. मा गा.. .गा धा×४

आ वे हो ल दी जान दि या वे बे लि या .:
..पा नी.. धा.. पा धा पा. मा गा धा. पा मा गा.....

जटी हीर नून फ़ ती र ना ल तो र दे = सैंती दे
पा×२ धा×२ पा धा सां नी धा पा *मा पा– सा ×४

रा द पा वें गी कुंडा पा र वा .:.
नी. धा पा. धा नी.. धा×२ पा. मा गा.....

सब गायन बजाकर दिखाई गई है जिसमें जल्द समझ में आ जावे–

नोट–प्रेमियो ! लदी एक स्त्री का नाम था जोकि माईदाल पर जान व माल से फ़िदा थी और रोज़ घड़े पर बैठ कर अपने यार के पास जाया करती थी एक दिन सास ने चालाकी से कच्चा घड़ा बदल दिया रात के समय नित्य की तरह नदी में घड़ा डाल सवार होकर जाने लगी कच्चा घड़ा मँझधार में डूबगया–यह गायन उसी समय को प्रकट करती है–

ज़बान फ़ारसी

ध्वनि ज़िला–ताल दादरा–लय चढ़ी–वक़्त तमाम दिन

तर्ज़–" आया करो इधरभी मेरी जां कभी कभी "

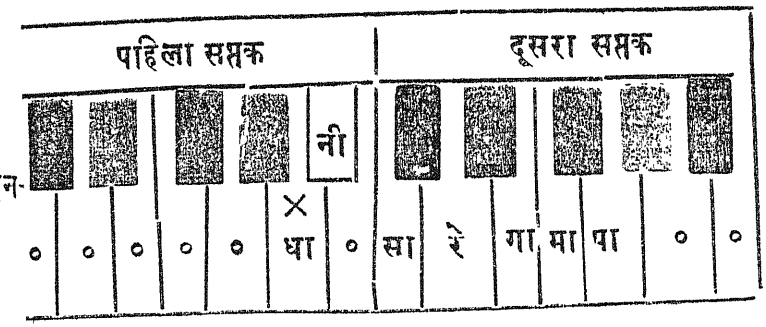

ग़ज़ल

इमरोज़ दीगरम बफ़िराक़े तो शाम शुद

दर आरज़ूये वस्ल तो उमरम् तमाम शुद

आमद नमाज़ शाम न आमद निगारमन

ऐ दीदः पासदार कि ख़्वाबम् हराम शुद

बस्तम् बसे खयाल कि बीनम् जमाल दोस्त

आं हम् न शुद मयस्सर सौदाय खाम शुद

खाले तो दान दानये ज़ुल्फ़े तो दाम दाम

मुर्ग़े कि दान दीद गिरफ़्तार दाम शुद

महमूद ग़ज़नवी कि हज़ारां ग़ुलाम दाश्त

इश्क़श् चुनां गिरफ़्त गुलामे गुलाम शुद

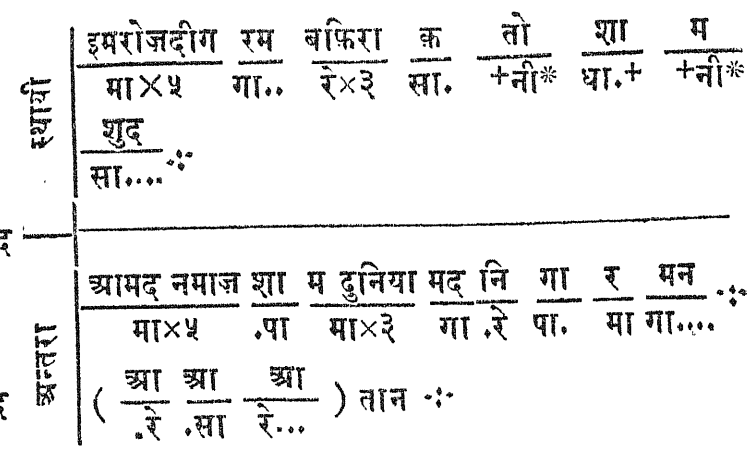

सूचना

(१) शेष सब पहिले पद अंतरे की ध्वनि पर और दूसरे पद स्थायी की ध्वनि पर बजेंगे–

(२) यह ग़ज़ल बहुतही सुगम रीति से बतलाई गई है प्रेमी लोग चलतू करने के पीछे ज़मज़मा देकर आनन्द पैदा कर सकते हैं ब्रैकेट की छोटी सी तान हर अन्तरे पर आनन्द देगी परिश्रम करके बजाना चाहिये–

ज़बान पूर्वी

ध्वनि देश-ताल कहरवा-लय चढ़ी-वक़्त ११ बजे रा

तर्ज़-" चलो जल्दी करो जी सैर "

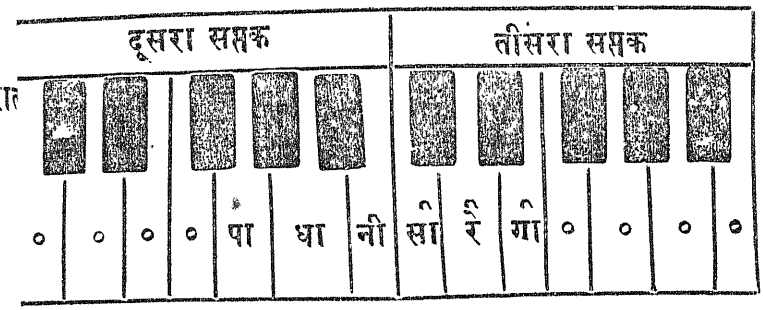

रसिया

तनी देखो हमरी ओर

ऊंची ऊंची जोबना पर जिया ललचावे

तनी देखो हमरी ओर…

ऐसी गोरी गोरी छोरी मैंने देखी नहीं राम

कैसी भोली भोली प्यारी प्यारी करे बिसराम

तनी देखो हमरी ओर…

चांदी ज्यों रूप चमके सोना ज्यों गाल

नागिनि ऐसे माथे लटके वाके कड़िया बाल

तनी देखो हमरी ओर…

गाल हैं पेड़े मथुराजी के होंठ कदू की फांक

धुइयां ऐसी मोटी आंखैं गाजर जैसी नाक

तनी देखो हमरी ओर…

स्थायी

ऊंची ऊंची जोबनाप र जि या ल ल चा
.सा ^ × ७ नी सा ^ ^गा .रे ^ .सा ^ नी..

आ वे त नी दे खो हम री ओर ∴
धा पा... पा धा नी. सा ^ नी×२ धा. पा....

अन्तरा

(१) ऐसी गोरी गोरी छोरी मैंने दे खी न हीं राम
सा ^ × ११ रे ^ ×२ सा ^. नी..

(२) कैसी भोलीभोलीप्यारीप्यारी क रे बि स राम
धा × १० .पा .नी×२ धा पा..

(३) त नी दे खो हम री ओर फिर पहिले से बजाओ–
पा धा नी. सा ^ नी×२ धा. पा....

सूचना

(१) शेष सब गायन उपरोक्त ढंग पर अन्तरे के नियम से बजाई जावेंगी–

(२) व (३) को प्रत्येक अखीरे पर अवश्य बजाना चाहिये जिससे गायन का आनन्द दूना हो जावे–

ज़बान अंगरेज़ी

ध्वनि देश–ताल कहरवा–लय दुगुन–वक्त ११ बजे रात

तर्ज़–" पनाह–पनाह ख़ुदा की पनाह "

थियेट्रिकल तर्ज़

अगेन–अगेन–अगेन ऐंड अगेन

ह्वेन आई वाज़ सिंगिल माई पाकेट वाज़ डिंगिल

आई लांग टूबी सिंगिल अगेन

अगेन–अगेन–अगेन ऐंड अगेन

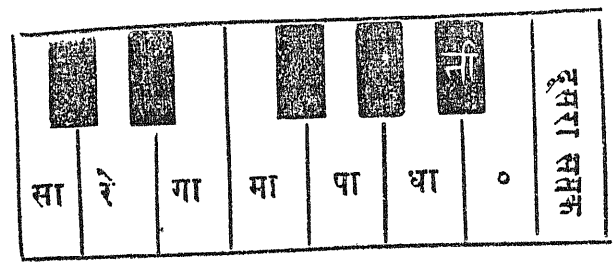

सम्पूर्णगायनबजाकरदिखाईगईहै

अ	गेन	अ	गेन	अ	गेन	ऐंड	अ	गेन
सा	मा..	सा	मा..	सा	मा	गा.	मा	पा...

ह्वेन	आई वाज़ सिंगिल	माई	पाकेट वाज़ डिंगिल
.मा	धा×५	.पा	..नी*×५

आई	लांग	टू	बी	सिं	गिल
.पा	धा	पा	.मा	.गा	.रे

अ	गेन	∴ फिर पहिले से बजावो
गा	मा....	

सूचना

(१) इस गायन के बजाने में हाथ कुछ फ़ुर्ती से चलाना चाहिये–

(२) ठहराव का ध्यान परमावश्यक है कारण कि यह थियेट्रिकल ढंग है जिसमें रागिनी साफ़ साफ़ ज़ाहिर नहीं होती अलबत्ता बोल काटने से यह इंगलिश टोन आनन्द से भर जाती है–

नोट–उपरोक्त ढंग की चीज़ें " हारमोनियममास्टर पांचवें-भाग " और " हारमोनियममास्टर छठेभाग " में बहुत सी लिखी हैं जिन महाशयों को आवश्यकता हो वह "नवलकिशोर प्रेस लखनऊ" से मँगा लेवें–

ज़बान तैलिंगी (दक्षिण)

रागिनी आसा–तालतीन–लय धीमी–वक्त प्रातःकाल–

तर्ज़–" प्रभु प्रीतम जिसने बिसारा "

आशिक की आवाज़

वाड़ियाड़ा उंटर्रू सूप रम्मां

वान सूपस्ते बोपुन्न अम्मां

वाड़ शामन्ती फूलन्ना गाड़े

वाड़ चेहलील लागंची न गाड़े

वाड़ीदर इयेत्ते नीन तेकन्दू

कद्दू ऊंची सूदो बेकल टद्दूं

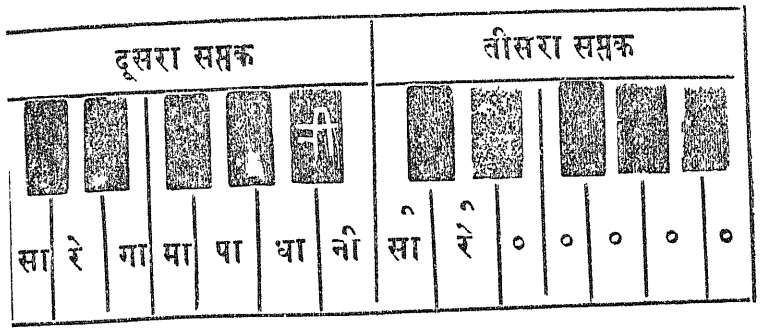

स्थायी

(१) वाड़ / सा×२   या / रे.   ड़ा / मा.   इस टुकड़े को तीन बार बजाओ !

वाड़ / सा×२   या / रे.   ड़ाउन / मा×३.   डू / पा   सू / धा   प / नी*   रम / धा   मां / पा..

(२) वा / मा   न / पा   सू / धा.   पस / पा.   ते / मा   बू / गा.   प / रे   न / गा   अम / रे.   मां / सा....

} दोनों एकसाथ बजें क्योंकि देरी न हो

अन्तरा

(३) वाड़शा / सां×३.   मन / रें.   ती / सां.   फू / नी..   लन / धा   ना / नी   गार / धा..

ड़े / पा.. ∴ दूसरा पद नं० २ के ढंग पर एक साथ बजाओ–

नोट–शेष सब गायन उपरोक्त ढंग पर बजाओ अर्थात् नम्बर ३ के ढंग पर पहिले पद और नम्बर २ के ढंग पर दूसरे पद सिवा नंबर १ के बजाये जावेंगे–

उल्था–हे सखियो ! वह कहां है एक नज़र तो दिखादो (२) यदि उसको बतलादोगी तो बड़ाही यश होगा (३) वह सेवती का फूल यदि होजाता (४) या वह झील में तनिक दृष्टि आता (५) यदि वह थक कर रहजावे तो मैं सहारा दूं (६) और घड़ा उतार कर चुम्मा दूं–

ज़बान उर्दू

ध्वनि भैरवी–ताल क़ौवाली–लय चढ़ी–वक़्त सुबह–

तर्ज़–" सर शोरीदः पायेदश्त पैमां शाम हिजरां "

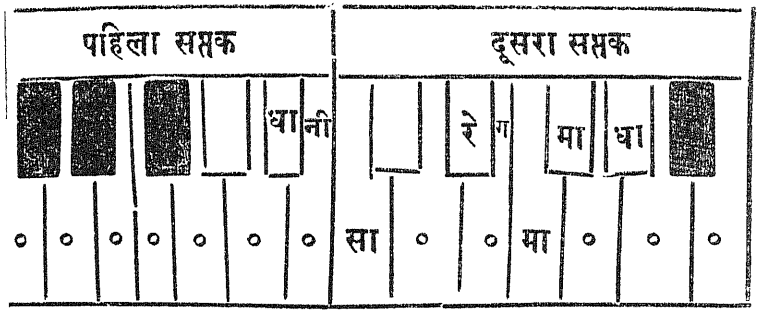

ग़ज़ल

बलायें ज़ुल्फ़ जानां की अगर लेते तो हम लेते
बला यह कौन लेता जान पर लेते तो हम लेते

न लेता कोइ सौदा मोल बाज़ारे मुहब्बत का
मगर जां नक़्द अपनी बेंच कर लेते तो हम लेते

जो होता हमसे हमबिस्तर बता फिर तेरा क्या जाता
तड़पकर करवटें दिन रात गर लेते तो हम लेते

तुझे क्या काम था ऐ बेख़बर जो ढूंढ़ता फिरता
दिले गुमगश्ता की अपने ख़बर लेते तो हम लेते

लगाया जाम होठोंसे जो उसने मुझको रश्क आया
कि बोसा उसके लब का ऐ ज़फ़र लेते तो हम लेते

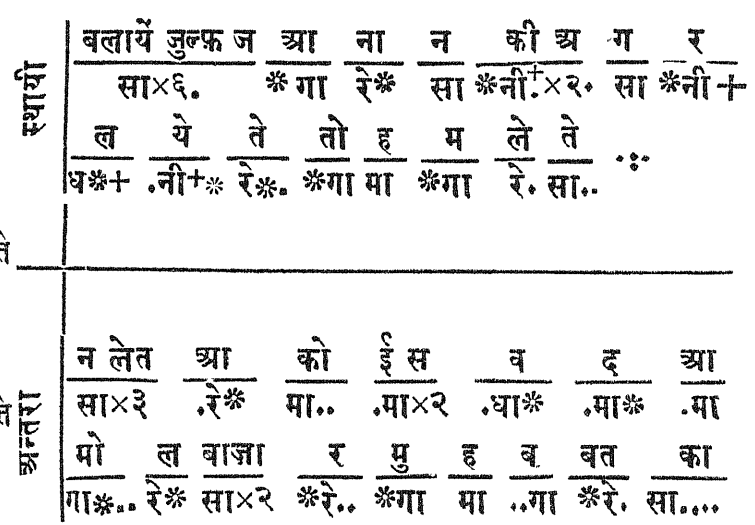

सूचना

(१) गायन के सब पहिले पद अन्तरा के ढंग पर और सरे पद स्थायी के नियम से बजाये जावेंगे–

(२) काले पर्दे इस ग़ज़ल में अधिक काम में लाये गये ध्यान करके उँगलियों को चलाना चाहिये–

ज़बान फ़ारसी व अरबी

ध्वनि सिन्धु भैरवी–ताल दादरा–लय दर्मियानी–वक़्त दोपहर या शाम–

तर्ज़–" इलाही खैर हो तेरी "

ग़ज़ल

असीरे इश्क़ मफ़तूं अस्त मजनूं
हरीक़ुन् क़ल्बहू वन्नारो मकनूनू

नमे दानद तबीब आज़ार मारा
वमायः वीह मिनहाजुन् व क़ानूनू

नमा तर दामनम् अन्दर नज़ारा
बरीयुन् नफ़्सो ना अम्मा यज़ननूनू

शहीदे अकबरस्तई कुश्तये इश्क़
बमा लिज्जुहद वत्तक़वा बममनूनू

बिया जाना बनाशम् लुत्फ़ फ़रमा
हुज़ूरुल्लू हय्य अलल अमवात मसनूनू

नयाज़ अन्दर खुमार अस्त ऐ दरेग़ा
वदुन्नुल्लू खम्र ममलूउन् व मदनूनू

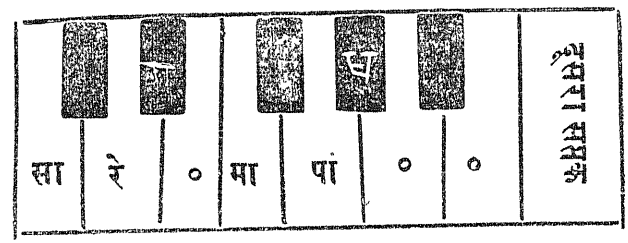

स्थायी अन्तरा बराबर

असीरे	इश	क़ मफ़	तूं	नस	त	म
धा*×३.	पा..	मा×२	*गा.	पा	मा	*गा.
ज	नूंन	::				
रे	सा....					

सूचना

(१) शेष सब गायन उपरोक्त ढंग पर बजाई जावेगी–

(२) अरबी के शब्द हारमोनियम पर फ़ारसी की तरह पर बजाये जावेंगे—

(३) गायन को कठिन समझ कर शिक्षक को घबराना न चाहिये यह ग़ज़ल बहुत सुगम है और सार्थक क़ौवाली की छन्द में है और बसबब हज़रत नयाज़ अहमद रहमतउल्ला अलेह के कलाम होने के मुसल्मानों में इज़्ज़त की निगाह से देखी जाती है–

(४) बहुधा सब क़ौवाली की ग़ज़लें उपरोक्त ढंग पर बजाई जाती हैं–

ज़बान तैलंगी व फ़ारसी

ध्वनि भैरवी–ताल क़ौवाली–लय दर्मियानी–वक़्त सुबह–

तर्ज़–" ऐ दिल तू क्यों हर आसान होगया "

शैर

चरू कट्टा मेदा फ़ाख़्ता नाशिस्ता बूद

तू पाकी तूने कूटते पर शिकस्ता बूद

ज़बान मरहटी व फ़ारसी

ध्वनि देश–ताल तीन–लय पड़ी हुई–वक़्त रात के ११ बजे

तर्ज़–" मेहर्बा–मेहर्बा जानजां "

शैर

दूनान पुख़्ता–बूदम कुतरां ध्यों घीला

शमशीर मेकशादम नाला चर पार घीला

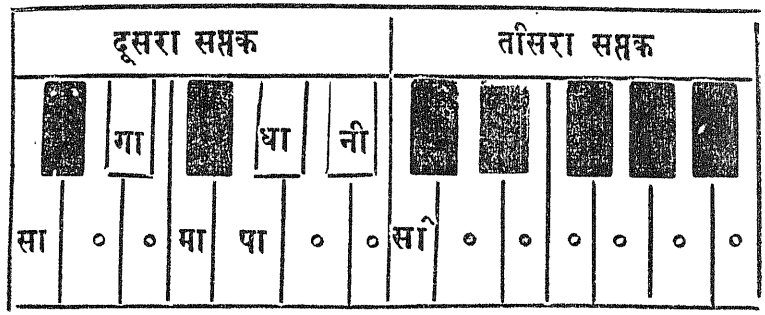

स्थायी अन्तरा बराबर

चरू कट्टा मेदा फ़ा ख़ ता बर न
सा×२ *गा×२ मा×२ पा .सां *नीं.. पा. *धा

शिकस ता बूद ...
.पा .मा *गा....

सूचना

(१) यह शैर बहुधा राज्य हैदराबाद के ज़िलों में छोटे छोटे लड़कों की ज़बानी सुना जाता है जोकि उपरोक्त छन्द में गाया जाता है–

(२) दूसरा पद भी उपरोक्त ढंग पर बजावो–

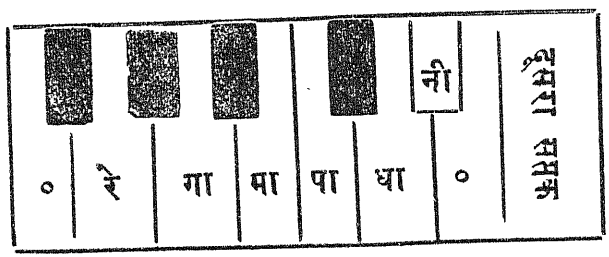

स्थायी अन्तरा बराबर

दू	ना	न	पुख	ता	बू	दम	कुत	रा	न
रे	मा.	रे	मा.	पा	*नी.	धा..	पा×२	मा.	गा
घवी	वन	घे	ला						
पा.	मा	गा.	रे....						

:०:

सूचना

(१) दूसरा पद उपरोक्त नियमानुसार बजाना चाहिये-

(२) यह ज़बान मरहटी का मिला हुआ शैर एक उम्दा ढंग पर बतलाया गया है-

---

ज़बान पंजाबी व उर्दू

ध्वनि भाग-ताल तीन-लय दर्मियानी-वक्त ११ बजे रात

तर्ज़-" तसां जो है सुख पावना "

ग़ज़ल

हरदम नू कर तेरियां रुठड़ा न जावें रांझना

इश्क़ तेरे दी वगदी सी रावी

विच पे गैयां घुम्मन घेरियां रुठड़ा न जावे....

तेरे जीहा मेनो होर न कोई

मेरे जीहां लिख चेरियां रुठड़ा न जावे....

सरते-फुलां दीखारी व चाई

दर दर हो काके रहियां रुठड़ा न जावे....

मेरे रुठियां कुछ नहीं बन्दा

तू रुठियां मर जाने सां रुठड़ा न जावे....

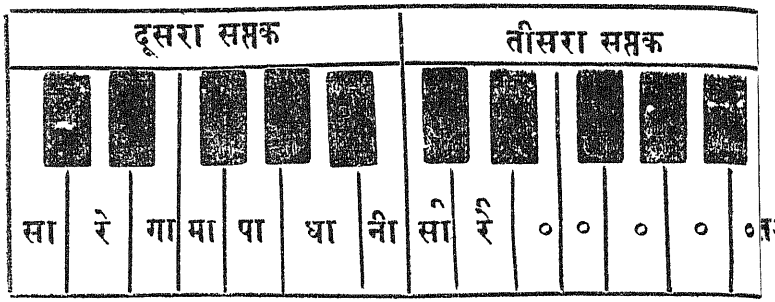

स्थायी

हरदम	नू	कर	ते	र	यां			
सां×४	नी..	धा×२	पा	मा	मा पा धा..			
					जल्दी			
रु	ठ	ड़ा	न	जा	वे	रां	झ	ना .:.
पा	धा	पा.	मा	गा..	मा	गा	रे	सा....

अन्तरा

इश्क	ते	रेदी	वग	दी	सी	र
पा×२	धा	सां×२.	सां×२.	रें.	सां	नी
आ	आ	आ	दी .:.			
..धा	..पा	..धा	नी....			

सूचना

(१) गायन के सब पहिले पद अन्तरा के ढंग पर और दूसरे पद स्थायी के ढंग पर बजाने चाहिये—

(२) "रुठड़ा न जावे रांझना" प्रत्येक शैर के अन्त पर अवश्य बजावे—

ज़बान अंगरेज़ी व उर्दू

ध्वनि भाग—ताल दादरा—लय तेज़—वक़्त १२ बजे रात—

तर्ज़—"मज़ा देते हैं क्या यार तेरे बाल"

नम्बर (१)

हियर—डियर—माई लेडी—लवली फ़ेसवाली

मेडम !

हीज़ डियर... ....

नम्बर (२)

ध्वनि देश—ताल चार—लय धीमी—वक़्त १० बजे रात—

तर्ज़—"कहते हैं वह सच मेरी जान"

टी ट्यूज़िंग ब्यूटी ने माई जंटिल हार्ट को तोड़ दिया

ज़ुल्फ़ तेरी के नेट में फँसकर नाइट स्लीपिंग छोड़दिया

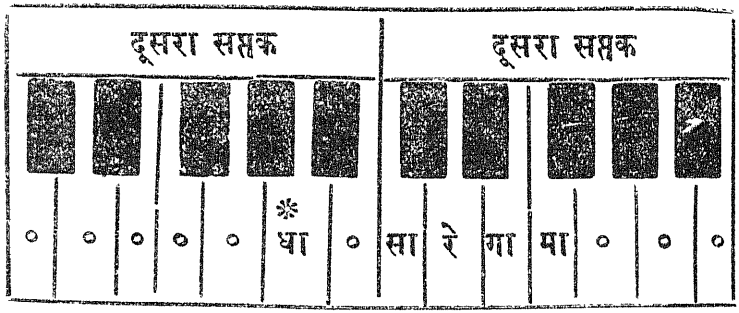

एक प्रख्यात चीज़ का पहिला पद

हि यर डि यर मा ई लेडी लवली फ़े सी वा
+.धा सा×२ रे गा रे मा×४ गा. रे ×२

ल ई मेडम
..गा .रे सा×२.... :॥

सूचना

(१) इस गायन के बजाने में जहां तक हो सके ज़मज़मे देने चाहिये जिससे गायन की भड़क अच्छी तरह से प्रकट हो–

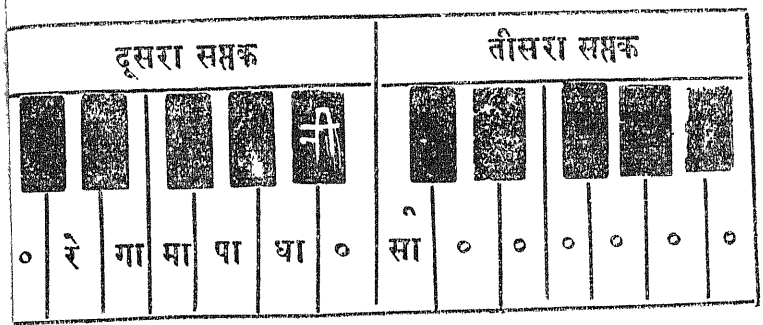

(१) टी थ्यजिंग ब्यूटी ने माई जेन टिल हार्ट को तोड़
रे×३ मा×२ पा धा. पा मा .गा..पा मा.
दि या
.गा रे.... :॥

जुल्फ़ तेरी के ने ट मैं फँ स क र नाइ
(२) ※नी ×६ सा ※नी धा पा .मा पा धा..
स ली पिंग छोड़ दि या
※नी धा पा .मा गा रे.... :॥

(१) बजाने के समय शब्द का ध्यान रक्खो नहीं तो गायन में सिकता पड़ेगा इससे ठहराव का ध्यान रखकर बजाओ–

ज़बान फ़ारसी व उर्दू

ध्वनि भाग—ताल क़ौवाली—लय चढ़ी—वक़्त १२ बजे रात—तर्ज़—" जो उम्र देखो तो दश बरस की यह क़हेर आफ़त ग़ज़ब ख़ुदा का "

ग़ज़ल

ज़ेहाल मिस्कीं मकुन तग़ाफुल दुराये नैना बनाये बतियां

कि ताबहिज्रां नदारम ऐजां न लेव काहे लगाय छतियां

चुशमा सोज़ां चुज़र्रे हैरां हमेशा गिरियां बइश्क़ आं मह

न नींद नैना न अंग चैना न आप आवें न भेजें पतियां

यक बयक अज़दिले तुमुज़तर बिबुर्द चश्मश क़रार लेकिन

किसे पड़ी है जो जा सुनावे पियारे पीको हमारी बतियां

शबान हिज्रां दराज़ चुं ज़ुल्फ़ व रोज़ वसलत चु उम्र कोता

सखी पिया को जो मैं न देखूं तो कैसे काटूं अँधेरी रतियां

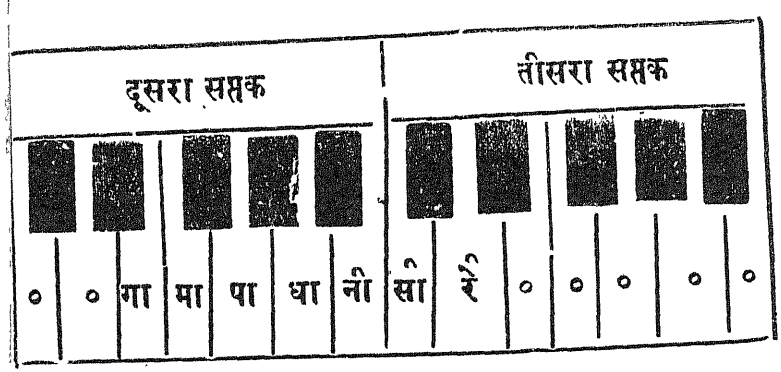

---

(१) ज़िहाल मिस्कीं म कुन त ग़ आ फुल
सां×५॰ .सां रें सां .नी धा×२॰
दु राय नै ना बना य बतियां
नी सां×२ नी धा॰ पा×२ मा गा×३.....

(२) कि ताब हिज्रां न दा रम ऐजां न लेव का
..गा धा×५ नी धा पा×२॰ मा गा×२ मा
हे लगा या छति यां .:.
पा धा×२ .पा मा×२ गा....

सूचना

(१) शेष सब गायन उपरोक्त नियमानुसार बजाये जावेंगे—

(२) यदि इस ग़ज़ल को दर्मियानी चाल में प्रारम्भ कर के दुगुन की लय में बजावोगे तो रागिनी अच्छी प्रकट होगी—

इति

निवेदन

प्रेमियो ! इस पुस्तक में जो गायन भिन्न भिन्न भाषाओं के लिखे हैं इनका स्केच हारमोनियम के नियमानुसार खींचा गया है और जहां तक हो सका वही रंगत स्थिर की गई है कि जिस छन्द में वह गाई जाती हैं कुछ भी अन्तर शेष नहीं रक्खा गया इसकारण सीखनेवालों को स्मरण रहे कि तर्ज़ को असल जान करके बजावें कठिन समझ कर छोड़ न बैठें यदि एक बार सफलता न हुई तो दूसरी बार बराबर परिश्रम करने से अवश्यही सफलता होगी–

प्रत्येक मनुष्य अपनी मातृभाषा के गायन उत्तमता से गा और बजा सकता है परन्तु दूसरी भाषाओं के गीत इस सुगमता से नहीं गा सकेगा यद्यपि बजाने में कोई कठिनता न होगी और प्रत्येक गवैये का साथ उत्तमता से करेगा कारण कि गानविद्या में स्वरों से काम करना पड़ता है शब्द और बोल से नहीं इससे एक अच्छे हारमोनियस्ट के लिये जिसका हाथ खूब चलता हुवा है और राग रागिनी के स्वरों से अच्छे प्रकार दक्ष है तो प्रत्येक भाषा के गायन इकसां हैं "मेरी यह एक शिक्षा सदैव स्मरण रक्खो जोकि तुमको सदैव सफलता का मार्ग बतलावेगी परिश्रम किये जावो जब तक कि दम में दम है तुम्हारा यहही पुरुषार्थ एक दिन भाग्योदय होकर प्रकट हो जायगा–

भवदीय

ग्रन्थ कर्त्ता

विज्ञापन।

पुस्तक "हारमोनियम मास्टर नवांभाग" जिसमें एशियायी कवियों की प्रत्येक प्रकारकी पद्य जैसे क़िता, मस्नवी, क़सीदा, ख़मूसा, सलाम, सेहरा, मुबारकबाद इत्यादि बहुतही उत्तमता से हारमोनियम पर बतलाये गये हैं यहां तक कि मिसरे और शैर भी बजाकर दिखाया है यह पुस्तक मुख्य कर कवियों के लिये जोकि हारमोनियम बजाना जानते हैं या सीखते हैं तैयार की गई है जोकि मनमानी सफलता उत्पन्न करने का मार्ग दिखायेगी–

यहही नहीं किन्तु प्रत्येक गायन के साथ साथ ज़मूज़मा, तान, पल्टा आदि भी बतलाये गये हैं जिससे रागिनी भले प्रकार ज्ञात होती है और वही आनन्द प्राप्त होता है कि जो एक हारमोनियस्ट अपनी शीघ्रगामी उँगलियों से पैदा कर सकता है–

यह पुस्तक ख़ास फ़र्मायशों से बनाई गई है इसकारण इसमें ग्रंथकार ने बड़े परिश्रम से हारमोनियम के स्केच खींचे हैं जोकि वास्तव में देखने योग्य हैं–

मिलने का पता—

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण–भार्गव

मालिक नवलकिशोर प्रेस–लखनऊ

विक्रयार्थ पुस्तकों का सूचीपत्र ॥

[illegible]

मिलने का पता:—

[illegible]

मालिक नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ